[This question paper contains 2 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 8063 **GC** **Your Roll No...............**

Unique Paper Code : 62051313

Name of the Paper : हिन्दी भाषा और साहित्य

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi B**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

निम्नलिखित सभी प्रश्न अनिवार्य है-

1. कहानी के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए।

अथवा

उपन्यास की परिभाषा देते हुए उसके विकास को स्पष्ट कीजिए। (12)

2. 'बूढ़ी काकी' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजए।

अथवा

'उसने कहा था' शिल्प की दृष्टि से अत्यंत सशक्त रचना है - स्पष्ट कीजिए। (12)

3. 'मेले में ऊँट' निबंध में राजनीतिक पराधीनता से मुक्ति को महत्व दिया गया है-- स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'सदाचार का ताबीज' में मूल्यों के पतन और भ्रष्ट व्यवस्था को चित्रित किया गया है। स्पष्ट कीजिए। (12)

'बिबिया' एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। विवेचन कीजिए।

5. निम्नलिखित प्रसंगों की व्याख्या कीजिए- (12)

(क) रूपा उस समय कार्यभार से उद्विग्न हो रही थी। कभी इस कोठे में जाती, कभी उस कोठे में, कभी कड़ाह के पास आती, कभी कंडार में जाती। किसी ने बाहर से आकर कहा-- ' महाराज ठंडाई माँग रहे हैं।' 'ठंडाई देने लगी। इतने में फिर किसी ने आकर कहा -- 'भाट आया है, उसे कुछ दे दो। 'भाट के लिए सीधा निकाल रही थी कि एक तीसरे आदमी ने आकर पूछा -- ' अभी भोजन तैयार होने में कितना विलंब है।'

अथवा

छोटे-से मंच पर बैठी, गंगा की उमड़ती हुई धारा को पन्ना अनमनस्क होकर देखने लगी। उस बात को, जी अतीत में एक बार, हाथ से अनजाने में खिसक जानेवाली वस्तु की तरह गुप्त हो गई, सोचने का कोई कारण नहीं। उससे कुछ बनता-बिगड़ता भी नहीं, परंतु मानव-स्वभाव हिसाब रखने की प्रथानुसार कभी-कभी कह बैठता है, "कि यदि यह बात हो गई होती तो।"। (10)

(ख) साधु ने समझाया, 'महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है, बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और किसी भी आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं।

अथवा

अंधेर नागरी अनबूझ राजा। टाका सेर भाजी टाका सेर खाजा।।
नीच उंच सब एकहि ऐसे। जैसे भँडुए पंडित तैसे।।
कुल-मरजाद न मान बड़ाई। सबै एक से लोग-लुगाई।।
जात-पाँत पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।।

6. निम्नलिखित किसी एक पर टिप्पणी लिखिए-- (10)

(क) कहानी और उपन्यास में अंतर।

अथवा

(ख) भारतेन्दु युगीन निबंध

अथवा